निबंध से ...

प्र० 1. मोर-मोरनी के नाम किस आधार पर रखे गए?

उत्तर: नीली गर्दन होने के कारण मोर का नाम नीलकण्ठ और मोरनी हमेशा छाया के समान उसके साथ-साथ रहने के कारण उसका नाम राधा रखा गया।

प्र० 2. जाले के बड़े घर में पहुँचने पर मोर के बच्चों का किस प्रकार स्वागत हुआ?

उत्तर = मोर और मोरनी के जाली के बड़े घर में पहुँचने पर लक्का कबूतर नाचना छोड़कर चारों ओर घूमकर गुटरगूँ-गुटरगूँ करने लगा। खरगोश उनका निरीक्षण करने लगा तथा तोता एक आँख बंद करके मोर के बच्चों का परीक्षण करने लगा। ~~तथा तोता एक आँख बंद करके मोर के बच्चों का परीक्षण करने लगा।~~

—x—x—

प्र० 3. लेखिका को नीलकण्ठ की कौन-कौन सी चेष्टाएँ बहुत भाती थी?

उत्तर: लेखिका को नीलकण्ठ की निम्नलिखित चेष्टाएँ बहुत भातीं थी?

(i) लेखिका के सामने सतरंगी मण्डलाकार छाता तानकर नृत्य की भंगिमा में खड़ा हो जाना।

(ii) हथेली पर रखे हुए मुने-चने कोमलता से धीरे-धीरे उठा कर खाना और गर्दन को टेढ़ी करके शकल सुनना।

(iii) मोर द्वारा ऊँची गर्दन करके देखना।

(iv) मेघ के गर्जन पर मोर प्रसन्न होकर नृत्य करने लगना।

—x—

प्र० 4. इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा' वाक्य किस घटना की ओर संकेत कर रहा है?

उत्तर = 'इस आनन्दोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा' यह वाक्य उस घटना की ओर संकेत कर रहा है, जब लेखिका चिड़िया बेचने वाले बड़े मियां से एक और घायल मोरनी सात रुपये में खरीद कर लायी थी और उसकी देखभाल करने पर वह ठीक हो गयी थी। लेखिका ने उस मोरनी का नाम कुब्जा रखा था। वह स्वभाव से बेमेल वाली होने के कारण राधा और नीलकण्ठ का साथ न देख करती थी। उसने राधा और नीलकण्ठ के जीवन को कलहपूर्ण बना दिया था। जिसका अन्त नीलकण्ठ के मरने के बाद हुआ था।

—×—

प्र० 5. वसंत ऋतु में नीलकण्ठ के लिए जालीघर में बंद रहना असहनीय क्यों हो जाता था?

उत्तर = नीलकण्ठ को फलों के वृक्षों की अपेक्षा पुष्पित और पल्लवित वृक्ष ज्यादा अच्छे लगते थे। वसंत ऋतु में जब आम के वृक्षों पर सुनहरी मंजरियाँ लटक जाती थी और अशोक वृक्ष लाल रंग वाले फूलों से भर उठता था तब नीलकण्ठ के लिए जाली घर में रहना मुश्किल हो जाता था इसलिए वह बार-बार जाली घर से बाहर निकलने का प्रयत्न करता था और लेखिका उसे बाहर छोड़ देती थी।

—×—

प्र० 6. जालीघर में रहनेवाले सभी जीव एक-दूसरे के मित्र बन गए थे, पर कुबजा के साथ ऐसा संभव क्यों नहीं हो पाया?

उत्तर: कुबजा मोरनी का स्वभाव बहुत खराब था इसलिए जब राधा और नीलकण्ठ की मित्रता से ईर्ष्या करती थी। इसके साथ ही वह जीव-जन्तुओं से भी झगड़ा करती थी। यह कारण था कि वह किसी की मित्र न बन सकी।

प्र० 7. नीलकण्ठ ने खरगोश के बच्चे को साँप से किस तरह बचाया? इस घटना के आधार पर नीलकण्ठ के स्वभाव की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: एक बार जाली वाले घर में एक साँप आ गया। उसे देखकर सभी जीव-जन्तु भयभीत होकर इधर-उधर भागने लगे। एक खरगोश का नन्हा बच्चा साँप की पकड़ में आ गया। साँप ने खरगोश के बच्चे को आधा निगल लिया बच्चे ने चीख-चीख निकाली। यह सुनकर नीलकंठ झूले से तुरन्त खरगोश के बच्चे का बचाव करने और अपनी पैनी चोंच से साँप को अधमरा कर दिया। जिससे खरगोश का बच्चा बच गया।

इस घटना के आधार पर नीलकण्ठ के स्वभाव सामने आती है।

(1) दयालु और सतर्क :- नीलकण्ठ दयालु और सतर्क था। उसने झूले से खरगोश शावक की चीमी-चीख सुनी और झूले से तुरन्त नीचे आकर बड़ी ~~सर्कता~~ सतर्कता के साथ खरगोश शावक को साँप के चंगुल से मुक्त कराया। इससे स्पष्ट होता है कि नीलकण्ठ दयालु स्वभाव से पूरित और सतर्क था।

Scanned with CamScanner

(ii) मेल-मिलाप वाला :- नीलकण्ठ मेल मिलाप वाला पक्षी था वह जाली घर में रहने वाले सभी जीव-जन्तुओं के साथ मेल-जोल बनाकर रहता था।

(iii) कुशल संरक्षक :- नीलकण्ठ जाली घर में रहने वाले सभी जीव-जन्तुओं को अपना संरक्षण प्रदान करता था। इसलिए उसने खरगोश के शावक को मृत्यु के मुँह से बचाया था।

भाषा की बात :-

प्र०1. 'रूप' शब्द से कुरूप, स्वरूप, बहुरूप आदि शब्द बनते हैं। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों से अन्य शब्द बनाओ
गन्ध, रंग, फल, ज्ञान।

उत्तर= गन्ध = सुगन्ध, दुर्गंध, गंधहीन, गंधरहित।
रंग = बदरंग, नवरंग, रंगीन, नौरंग, रंगीला।
फल = सफल, निष्फल, फलाहार, फलहीन, फलदार।
ज्ञान = अज्ञान, विज्ञान, संज्ञान, ज्ञानवान्।

प्र० 2. विस्मयाभिभूत शब्द विस्मय और अभिभूत दो शब्दों के योग से बना है। इसमें विस्मय के य् के साथ अभिभूत के अ के मिलने से या हो गया है। अ आदि वर्ण है। ये सभी वर्ण-ध्वनियों में व्याप्त है। व्यंजनों वर्णों में इसके योग को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जैसे- क् + अ = क इत्यादि। अ की मात्रा के चिह्न (ा) से आप परिचित है। अ की भाँति किसी

शब्द में अंत के भी जुड़ने से आकार की मात्रा ही लगती है, जैसे - मण्डल + आकार = मण्डलाकार। मण्डल और आकार की संधि करने पर (जोड़ने पर) मण्डलाकार शब्द बनता है और मण्डलाकार शब्द का विग्रह करने पर (तोड़ने पर) मण्डल और आकार दोनों अलग होते हैं। आगे दिए गए शब्दों के संधि-विग्रह कीजिए।

सन्धि	विग्रह
नील + आम = ...	सिंहासन : _____
नव + आगन्तुक = ...	मेघाच्छन्न : _____

उत्तर = सन्धि

नील + आम = नीलाम।

नव + आगंतुक = नवागन्तुक

विग्रह (विच्छेद)

सिंहासन = सिंह + आसन।

मेघाच्छान्न = मेघ + आच्छन्न।